डॉ. राशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part – I
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – I

Date :- 22-02-2022

Ajanta
Page No.
Date

कबीरदास के पद की व्याख्या (भाग-1)

लव लागी तब जानिए,
घूटि कभूँ नहिं जाय।
जीवत लव लागी रहै,
मूए तहँहि समाय॥

व्याख्या :-

कबीरदास कहते हैं कि जो मनुष्य सदोपदेश में मग्न रहते हैं तात्पर्य सदगुरु से ज्ञान प्राप्त करने हेतु उनका साथ कभी भी नहीं छोड़ता। जीवन भर उसका ध्यान गुरु उपदेशानुसार ब्रह्म में बना रहता है, वह मृत्यु के पश्चात भी उसी में समा जाता है। तात्पर्य जीव और ब्रह्म एक हो जाते हैं। यही सच्ची भक्ति की पहचान है।

लगी लगन छूटै नहीं,
जीभ चोंच जरि जाय।
मीठा कहा अंगार में,
जाहि चकोर चबाय॥

व्याख्या :-

कबीरदास कहते हैं कि विषय-वासनाओं में लीन व्यक्ति अपनी जिह्वा या

Scanned by CamScanner

या चोंच तक जला डालता है। जिस प्रकार अपने स्वभाववश चकोर अग्नि को खाने के प्रयास में अपने मुँह और जीभ की हानि कर डालता है। इसी प्रकार सच्चा साधक अथवा भक्त कठिन परिस्थितियों में भी परब्रह्म से अपने प्रेम (स्नेह/भक्ति) में कभी कमी नहीं आने देता।

Scanned by CamScanner